संस्मरण

ये फूल किसने बनाया ?

❑ धर्मेन्द्र कुमार शर्मा

प्राथमिक विद्यालयों में कलाओं-चित्रकला, मूर्ति-शिल्प, गीत-संगीत, नृत्य आदि की शिक्षा को आज भी विशेष महत्व दिया जाता हो, ऐसा सब जगह नहीं मिलता । सामान्यत: कला शिक्षा दूसरी प्राथमिकता मानी जाती है। कल्पना और सृजनशीलता जैसे तत्वों की प्रधानता के कारण कला-शिक्षण की प्रकृति विषय-शिक्षण से खासी भिन्न हो जाती है । ऐसी स्थिति में यदि कला शिक्षक का व्यवहार बच्चे के प्रति कठोर होता है तो बच्चा कला से विमुख हो जायेगा । शायद यही इस संस्मरण का सबक है ।

आज भी जब बच्चों को कागज पर पैंसिल, क्रयॉन या रंगों भरे ब्रुश से चित्रकारी करते देखता हूं तो मुझे अपना बचपन रह-रहकर याद आता है । आज तो बचपन का अधिकांश हिस्सा पढ़ाई लिखाई के बोझ से दबा हुआ लगता है। पर शायद हमारे ऊपर इतना बोझ तो नहीं रहा था या ये भी हो सकता है कि हम अपने बस्ते को इतना चाहते थे कि वह बोझ महसूस ही न होता हो। पर जो बात मैं कहना चाह रहा हूं वो शायद बस्ते के बोझ की तो है ही नहीं ।

मैं पांचवी क्लास तक तो एक ऐसे स्कूल में था जहां पांच सालों तक कागज पर या तख्ती पर चित्र बनाने जैसी हरकतों (नाजायज) केलिए कोई अवकाश या कहें प्रावधान तक नहीं था। घर पर अगर फर्श पर स्लेटी (बरती) या स्कूल से उठाकर लाये गये चॉक के टुकड़ों से कुछ कलाकारी करना भी चाहते तो मां की डांट पड़ने का भय बना रहता । चित्र बनाने के प्रति रुचि बन नहीं पाई क्योंकि पूरे परिवेश में कोई भी अवसर उपलब्ध नहीं था ।

कक्षा 6 में मुझे दूसरे स्कूल में दाखिला लेना पड़ा, क्योंकि स्कूल में सहशिक्षा का प्रावधान कक्षा 5 तक ही था। खैर, स्कूल बदला तो क्या कुछ नहीं बदल गया। यूं तो प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा में बदलाव की बात कोई आज की तो है नहीं, ये तो सालों से चली आ रही है, और शायद सालों तक चलती भी रहेगी। नई योजनाएं ऊपर से आती हैं जिनका बच्चों के सीखने की क्षमताओं और रुचियों से कोई खास सरोकार होता नहीं । वैसी ही एक योजना निर्देश के रूप में आई थी जिसे बेचारे (वैसे वास्तव में वे अब तक भी हैं) मास्टर लोगों को निभाना पड़ता था । सलेबस में है, कहकर हमसे भी मनवाना चाहते थे । तो, बच्चों के सर्वांगीण विकास के नाम पर चित्रकला और गीत-संगीत आदि को एक कालांश में पढ़ाने का अभियान छिड़ गया । उसकी चपेट में हम जैसे कक्षा 6 के बच्चे आ गये ।

एक मोटे से सरदार जी हमारे 'कला' के अध्यापक होते थे। उनके लिए उन्हीं के साइज की कुर्सी भी चाहिये थी, जिसे वे बच्चों से मंगवाकर पेड़ की छाया में बैठ जाते और हमें भी उनके आगे पंक्तिबद्ध होकर बैठना पड़ता । पहले ही दिन उन्होंने बच्चों पर ये हुक्म फरमा दिया कि कल से सब बच्चों को चित्रकला की कॉपी लानी होगी । वैसे मैंने चित्रकला की कॉपी अपने बड़े भाई के पास देखी थी, वह मुझसे दो या शायद तीन क्लास आगे था और एक इंग्लिश मीडियम पब्लिक स्कूल में पढ़ता था। आयताकार कॉपी में एक पारदर्शी पन्नी के बाद एक शीट होती थी, जिस पर वह तो नियमित रूप से चित्र बनाता था क्योंकि उसे पहली कक्षा से ही ऐसा करना होता था। मैं देखता था कि वह और भी कई कलाकारियां करता । जैसे हार्डबोर्ड, जिस पर एक क्लिप लगा दो तो परीक्षा देने का बोर्ड बन जाता था, पर पहले तो फूल बनाता पेंट से , फिर उसे सुखाकर कांच के चूरे से छोटे-छोटे टुकडे फेवीकोल से उस पर चिपकाता। उसका प्रिय चित्र फूल था, कमल का फूल । उसका नाम भी कमल है ।

मैं बड़ी उत्सुकता से देखता और चाहता कि मैं भी चित्र बनाऊं । पर डांट का डर, सिर पर तारी रहता । छठी क्लास में जब चित्रकला एक विषय के रूप में आरंभ की गई, तब तक चित्रकला का भूत विदा हो चुका था । पर अध्यापक की आज्ञा एक मजबूरी बनकर रह गई थी । मजबूरन कॉपी खरीदनी पड़ी और रंग की एक डिब्बी भी जिसमें ब्रुश काफी घटिया होता था । चूंकि ये सब सामग्री मां बाप के आदेश पर ही खरीदी जा सकती थी तो एक अनावश्यक खर्च मानकर उनकी भौंहें तनना स्वाभाविक था, पर विद्यालय के आदेश के सामने अभिभावक कर भी क्या सकते हैं ?

नतीजन, अगले दिन कालांश में सभी बच्चे कापियां ले आये ड्राइंग की । अब मास्टर जी ने आदेश दिया कि सब बच्चे चित्र बनाओ। हमारे लिए असमंजस की स्थिति । कुछ बच्चों को बनाना आता था कुछ को नहीं । मेरे जैसे बच्चे उन बच्चों के पास खिसके

जो चित्र बनाना जानते थे, इस पर मास्टर जी की नशीली (शायद शराब ज्यादा पीते थे वे) आंखें मेरी ओर मुड़ीं, मानो इशारा कर रही हों कि ये तो खुद की अर्थी है, और खुद ही को उठानी है । मैं दूर हो गया । नई और बिल्कुल कोरी ड्राईंग की कॉपी पर मैं ऐसा क्या बनाता कि शाबासी मिले । अचानक मास्टर जी का कोई परिचित आ गया और वे उससे गपशप में मशगूल हो गए । हमने राहत की सांस ली । घंटी बजने में कुछ ही देर थी कि वे परिचित चले गये। फिर आफत । मास्टर जी ने घड़ी देखी और कहा कि कल सभी बच्चे अपनी कापी में सुन्दर-सा चित्र बनाकर लायेंगे । हमारी जान में जान आयी । पर मैंने पूछा कि कौन सा चित्र सर ? उन्होंने तीन-चार चित्रों के नाम बताये जिसमें कमल का फूल भी था। मानों अन्धे को आंखें मिल गई हों । शाम को घर लौटते ही, बडे भाई के पास वैसे ही मंडराना शुरू कर दिया जैसे मीठी चीज पर मक्खियां । उसने भी मौके का फायदा उठाया और कभी पानी मंगाया तो कभी पतंग, तो कभी क्या । आज्ञाकारी की तरह सब काम किये और फिर तुरंत ड्राइंग की कॉपी उसके आगे कर दी । आंखों में याचना भाव लिये मैं खड़ा था, उससे कमल का फूल बनवाने के लिए ।

मैंने चाहा कि वह पैंसिल से आउट लाइन बना दे, उसमें मैं अपने आप रंग भर दूंगा। पर उसने कहा कि नहीं तुझे तो रंग मिलाने नहीं आते, पत्ते का रंग कैसे बनायेगा तू । डिब्बी में जो हरा है वो तोतई है । मैं खामोश रहा, और अपनी कॉपी पर कमल का फूल बनता और उसमें रंग भरते हुए आती एकाग्रता को अनमने मन से देखता रहा । अपनी कलाकारी का जौहर दिखाते हुए उसने ब्रश से ही लिख दिया कमल का फूल । मुझे लगा ये तो गड़बड़ हो गई। खैर अगले दिन की प्रतीक्षा में रात गुजारी ।

गणित की घंटी के बाद, चित्रकला का कालांश और वही पेड़ की छाया । खिजाब से रंगी दाढी वाले वही बाबरा मास्टर जी। सबकी कॉपियां चैक हो रही थीं, अनेक बच्चों के चित्र देख देख कर मास्टर बच्चों को जता रहे थे कि देखो कितना अच्छा चित्र बनाया है, कितना गंदा चित्र बनाया है । मानो उनके पास कोई तीसरा मापदण्ड था ही नहीं कला को परखने का । मेरा भी नम्बर आया। चित्र देखते ही मास्टर जी की आंखों में चमक आ गई और मेरी आंखों में उदासी । मैं आत्मविश्वास खो बैठा, मास्टर जी ने मेरी ओर देखा, प्यार से कहा, बड़ा अच्छा चित्र बनाया है, पहले भी ड्राईंग करते थे क्या ? मैनें अपने आपको समेटते हुए कहा नहीं जी, सुनते ही उनकी आंखें अपना रंग बदल गईं । उन्होंने कड़ककर पूछा ''ये फूल किसने बनाया ?'' मेरा चेहरा फीका पड़ गया और दुर्बल काया कांपने लगी । और क्षण भर के भीतर उनका भारी भरकम थप्पड मेरे गाल पर लगा । मैं दीवार से जाकर लगा और गिर गया। वो फूल, वो मास्टर, वो थप्पड़ और वो सब दृश्य आज भी मेरे जहन में किसी चित्र की तरह चिपके पड़े हैं और मैं आज तक एक फूल का चित्र सही से नहीं बना पाता ।◆